॥ तुलसी विवाह महात्म्य एवं विवाह पद्धति ॥

विषय अनुक्रमाणिका

॥ तुलसी विवाह महात्म्य ॥

कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को हमारे देश में देवोत्थान, तुलसी विवाह एवं भीष्म पंचक एकादशी के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन तुलसी पूजन का उत्सव पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है। हमारे धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि कार्तिक के पावन महिने में जो भक्त मां तुलसी का विवाह भगवान से करवाते हैं, उनके पिछले जन्मो के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

शास्त्रों में कहा गया है कि आषाढ़ मास देवशयनी एकादशी से कार्तिक मास तक के समय को चातुर्मास कहा गया हैं। इन चार महीनों में भगवान विष्णु क्षीरसागर की अनंत शैय्या पर शयन करते हैं, जिसकारण कृषि के अलावा समस्त शुभ कार्य जैसे शादी-व्याह, व्रत, नए घर में प्रवेश जैसे समस्त मांगलिक कार्यों पर विराम लग जाता है। किन्तु देवउठनी एकादशी से भगवान के जागने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है एवं मांगलिक कार्यो की शुरुआत हो जाती है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य के मिथुन राशि में आने पर भगवान श्री हरि विष्णु शयन करते हैं और तुला राशि में सूर्य के जाने पर भगवान शयन कर उठते हैं।

भगवान विष्णु के स्वरुप शालिग्राम और माता तुलसी के मिलन का पर्व तुलसी विवाह हिन्दू पंचांग के अनुसार कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है।

तुलसी विवाह महिमा

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में कहा गया है कि एकादशी-माहात्म्य के अनुसार श्री हरि-प्रबोधिनी यानि देवोत्थान एकादशी का व्रत करने से एक हजार अश्वमेध यज्ञ तथा सौ राजसूय यज्ञों के बराबर फल मिलता है। इस परम पुण्य प्रदायक एकादशी के विधिवत व्रत से सब पाप नष्ट और भस्म हो जाते हैं, इस एकादशी के दिन जो भी भक्त श्रद्धा के साथ जो कुछ भी जप-तप, स्नान-दान, होम करते हैं,वह सब अक्षय फलदायक हो जाता है।कहते हैं कि समस्त सनातन धर्मी का आध्यात्मिक कर्तव्य है कि देवउठवनी एकादशी का व्रत अवश्य करें। इस व्रत को करने वाला दिव्य फल प्राप्त करता है।

तुलसी विवाह की कथा

शास्त्रों के अनुसार जालंधर नामक एक बहुत ही भयंकर राक्षस था जिसे की युद्ध में हराना नामुमक़िन था सभी देवतागण उनसे खौफ खाते थे और वह बहुत शक्तिशाली था जिसकी वजह से उसने पूरे संसार में अत्याचार कर रखा था। और उसकी वीरता का राज उसकी धर्मपत्नी वृंदा का उसके प्रति पत्नी धर्म का पालन करना था जिस कारणवश वह पूरे विश्व में सर्वविजयी बना हुआ था। जालंधर के अत्याचार के कारणवश सभी देवता भगवान विष्णु के पास सहायता मांगने पहुंचे तब भगवान विष्णु ने देवताओ की मदद करने का फैसला किया।

उसके बाद जब जालंधर युद्ध के लिए जा रहे थे तब भगवान विष्णु वृंदा के सतीत्व धर्म को भंग करने के लिए जालंधर का अवतार लेकर उनके पास पहुँच गए। उसके बाद जालंधर युद्ध में हार गया और उनकी मृत्यु हो गयी। उसके बाद उन्हें भगवान विष्णु के उस अवतार के बारे में पता चला तो उन्होंने भगवान विष्णु को श्राप दिया की आप एक पत्थर की मूर्त बन जायेंगे। उसके बाद वह अपनी पति की मृत्यु के पश्चात् उन्ही के साथ सती हो गयी। जहाँ उन्होंने अपने प्राण त्यागे वही पर तुलसी का पौधा उत्पन्न हो गया।

उसके बाद भगवान विष्णु ने वृंदा को यह वचन दिया की अगले जन्म में तुम्हारा जन्म तुलसी के रूप में होगा और तुम्हारा विवाह मेरे साथ होगा। इसी वजह से अगले जन्म में भगवान विष्णु ने शालिग्राम के रूप में जन्म लिया और कार्तिक मास की एकादशी के दिन तुलसी माता से विवाह किया।

हिन्दू शास्त्रों में कहा गया है कि नि:संतान दंपत्ति को जीवन में एक बार तुलसी का विवाह करके कन्यादान का पुण्य अवश्य प्राप्त करना चाहिए क्योंकि तुलसी विवाह करने से कन्यादान के समान पुण्यफल की प्राप्ति होती है। कार्तिक शुक्ल एकादशी पर तुलसी विवाह का विधिवत पूजन करने से भक्तों को मनोवाछित फल की प्राप्ती होती हैं। तुलसी जी कि नियमित पूजा से व्यक्ति को पापों से मुक्ति तथा पुण्य फल में वृद्धि होती है। पूजा पद्धति के अनुसार सभी देवी तथा देवताओं को तुलसी जी अर्पित की जाती है। तुलसी के पौधे को पवित्र और पूजनीय माना गया है। तुलसी विवाह के सुअवसर पर व्रत रखने का बड़ा ही महत्व है।

घर पर तुलसी विवाह कराने की विधि

भगवान विष्णु को चातुरमास की योग-निद्रा से जगाने के लिए घण्टा, शंख, मृदंग आदि वाद्यों की मांगलिक ध्वनि के बीच ये श्लोक पढ़कर जगाते हैं-

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यजनिद्रांजगत्पते । त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तमिदंभवेत् ॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वाराह दंष्ट्रोद्धृत वसुन्धरे । हिरण्याक्ष प्राणघातिन्त्रैलोक्येमङ्गलम्कुरु ॥

- घर के सभी सदस्य शाम के समय विवाह समारोह के लिए तैयार हो जाएं।
- तुलसी का एक पौधा एक पटिये पर आंगन, छत या घर के बीच में रख लें।
- तुलसी के गमले के ऊपर गन्ने का मंडप बनाकर सजा दें।
- विवाह की शुरुआत में तुलसी देवी पर एक लाल चुनरी एवं समस्त सुहाग सामग्री चढ़ा दें।
- तुलसी के गमले में शालिग्राम जी को रखें और विवाह शुरू करवाएं।
- गणेश जी सहित सभी देवी-देवताओं का विधिवत पूजन करने के साथ ही तुलसीजी एवं शालिग्रामजी का षोडशोपचार विधि से पूजा करनी चाहिए।
- पूजन के करते समय तुलसी मंत्र तुलस्यै नम: का जाप अवश्य करना चाहिए।
- विवाह के समय शालिग्राम जी पर चावल नहीं चढ़ते हैं उन पर तिल चढ़ाएं।
- शालिग्राम की मूर्ति का सिंहासन हाथ में लेकर तुलसीजी की सात परिक्रमा कराएं।
- विवाह में जो सभी रीति-रिवाज होते हैं उसी तरह तुलसी विवाह के सभी कार्य किए जाते हैं।
- विवाह के समय बोला जाने वाला मंगलाष्टक अवश्य बोलें। मंत्र जाप करें।
- विवाह से संबंधित मंगल गीत भी गाए जाते हैं।
- तुलसी और शालिग्राम की कपूर से आरती करें।
- प्रसाद को ग्रहण करें और परिजनों और गरीबों में बांट दें।
- इसके बाद तुलसी नामाष्टक का पाठ करें।

॥ तुलसी विवाह प्रारम्भ ॥

- **पवित्रकरणम्** — ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा ।
  य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥

- **आचम्य** — आचमन करें हाथ धो लें — ॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः ।
  ॐ हृषीकेशाय नमः ।

- **आसन शुद्धि** — ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
  त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
  - ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

- **पवित्री (पैंती) धारणम्** — ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसवऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्काम: पूनेतच्छकेयम् ॥

- **यज्ञोपवित** — ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।
  आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः ॥

- **शिखाबन्धन** — ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज: समन्विते ।
  तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धि कुरुव मे ॥

- **तिलक** — चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम् ।
  आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥

- **रक्षाबन्धनम्** — येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल: ।
  तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल: ॥

- **स्वस्ति-वाचन** — ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
  देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ ॥१॥
  - देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम् ।
    देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयु: प्रतिरन्तु जीवसे ॥ ॥२॥
  - तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्निधम् ।
    अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ॥३॥
  - तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
    तद् ग्रावाण: सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम् ॥४॥

- तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
  पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॥५॥
- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
  स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॥६॥
- पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं ग्यावानो विदथेषु जग्मयः ।
  अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह ॥ ॥७॥
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
  स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ॥८॥
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम् ।
  पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः ॥ ॥९॥
- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः ।
  विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥ ॥१०॥
- द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
  शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
  सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ॥११॥
- यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
  शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ ॥१२॥

१. श्रीमन महागणाधीपतये नमः ।
२. इष्ट देवताभ्यो नमः ।
३. कुल देवताभ्यो नमः ।
४. ग्राम देवताभ्यो नमः ।
५. स्थान देवताभ्यो नमः ।
६. वास्तु देवताभ्यो नमः ।
७. वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम नमः ।
८. लक्ष्मी नारायणाभ्याम नमः ।
९. उमा महेश्वराभ्याम नमः ।
१०. शची पुरंदाराभ्याम नमः ।
११. मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।
१२. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
१३. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
१४. एतत कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः ।

- सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः ।
  लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ॥ १॥
- धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
  द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ ॥ २॥
- विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
  संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ॥ ३॥
- शुक्लाम्बरधरम् देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम ।
  प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ॥ ॥ ४॥

- अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
  सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ॥ ५॥
- सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥ ॥ ६॥
- सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम ।
  येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरीः ॥ ॥ ७॥
- तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
  विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्घ्री युगं स्मरामि ॥ ८॥
- लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
  येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ ॥ ९॥
- यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
  तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मम ॥ ॥१०॥
- अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपास्ते ।
  तेषां नित्याभि युक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ॥११॥
- स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
  पुरूषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ॥ ॥१२॥
- सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः ।
  देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥ ॥१३॥
- विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
  वन्द काशीं गुहां गंगां भवनीं मणिकर्णिकाम् ॥ ॥१४॥
- वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि सम प्रभ ।
  निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ॥१५॥

- **संकल्प** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे अमुक-क्षेत्रे, अमुक-देशे, अमुक-नगरे, (ग्रामे वा) बौद्धावतारे अमुक-शालीवाहन शके, अस्मिन्वर्तमाने, अमुक-संवत्सरे, दक्षिणायने, मासानां मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे, शुक्ल-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रः अमुक-शर्माऽहं ममाऽखिल विविधपातक शमन पूर्वक अभीष्ट सिद्धि द्वारा श्री महाविष्णु प्रीत्यर्थं तुलसी विवाहं करिष्ये । तदग्डत्वेन गणेशपूजनं, स्वस्तिवाचनं, पुण्याहवाचनं, ग्रहयज्ञश्च अहं करिष्ये ।

- **रक्षा विधानम्** — अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
  ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
  - अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिशम्।
    सर्वेषाम विरोधेन पूजा कर्म समारभे॥
- **दिप स्थापनम्** — दीपज्योति: परब्रह्म: दीपज्योति: जनार्दन:।
  दीपोहरतिमे पापं दीपज्योतिर् नामोस्तुते॥
- **सूर्य नमस्कार** — ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश्शयन्नमृतम्मर्त्यञ्च।
  हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
- **शंख पूजनम्** — ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि।
  तन्नो शंख: प्रचोदयात्॥
- **घंटी पूजनम्** — आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
  घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत॥

॥ गणेश अम्बिका पूजनम् ॥

- **गणेश ध्यानम्** **ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥**
  - **गजाननम् भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फलचारु भक्षणम् । उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नम: । गणपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

- **गौरी ध्यानम्** **नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियता: प्रणताः स्म ताम् ॥**
  - **ॐ हेमद्रितनायां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाह्याम्यहम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्यै नम: । गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।
  - नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।

- **विशेषार्घ्य** एक ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखलें ।
  - **रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥**
  - **द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥**
  - **अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।**
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

- **प्रार्थना** **विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥**
  - **त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया । सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥**
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।

- **समर्पण** अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

॥ कलश पूजनम् ॥

- **भूमि स्पर्श** — ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
  पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ४ ह पृथिवीं माहि ४ सी: ॥ भूमि का स्पर्श करें
- **धान्य प्रक्षेप** — ॐ ओषधय: समवदन्त, सोमेन सह राज्ञा।
  यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ४ राजन् पारयामसि ॥ भूमि पर सप्तधान्य रखें
- **कलश स्थापयेत्** — ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दव: पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा न:।
  सहस्रं धुक्क्ष्वोरु धारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयि:॥ सप्तधान्य पर कलश रखें
- **कलशे जल पूरणम्** — ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुण्स्य ऽऋत
  सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद ॥
- **कलशे सोपारी प्रक्षेप** — ॐ या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी।
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ४ हस: ॥ कलश में सोपारी रखें
- **कलशे हिरण्य प्रक्षेप** — ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जात: पतिरेक ऽआसीत।
  स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ कलश में दक्षिणा छोडें
- **कलश में सूत्र लपेटे** — ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमा सदत्स्व:।
  वासो अग्ने विश्वरूप ४ संव्ययस्व विभावसो ॥ कलश में मौली लपेट दें
- कलश पर नारीयल रखें — **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।**
  इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ पूर्णपात्र पर नारियल रखें
- **कलश आवाहन** — ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्विर्भि:।
  अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ४ समा न आयु: प्रमोषी:॥
  - कलशस्य मुखे विष्णु: कण्ठे रुद्र समाश्रिता:।
    मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मात्र-गणा: स्मृता: ॥ ॥१॥
  - कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्वीपा वसुंधरा।
    ऋग्वेदोथ यजुर्वेद: सामवेदो ह्यथर्वण: ॥ ॥२॥
  - अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिता:।
    अत्र गायत्री सावित्री शान्ति: पुष्टिकरी तथा ॥ ॥३॥

- **आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय-कारका: ।**
- **गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।**
  नर्मदे सिन्धु-कावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु ॥ ॥४॥
- अस्मिन कलशे वरुणं सांङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।
  ॐ भूभुर्व: स्व: भो वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ स्थापयामि, पूजयामि मम पूजां गृहाण ।
  ॐ अपां पतये वरुणाय नम: ।

- **कलश चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत्** कलश के चारो तरफ कुंकुम एवं चावल लगा दें

पूर्व	**ऋग्वेदाय नम: ।**	**उत्तर**	**अथर्वेदाय नम: ।**
दक्षिण	**यजुर्वेदाय नम: ।**	**कलश के ऊपर**	**ॐ अपाम्पतये वरुणाय नम: ।**
पश्चिम	**सामवेदाय नम: ।**		

- नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।

- **अर्पण** अनेन कृतेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ षोडश मातृका पूजनम् ॥

ॐ आत्मनःकुल-देवतायै नमः १७	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसायै नमः ९	ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः १२
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः ११	ॐ सावित्र्यै नमः ७	ॐ गौर्य्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं॥
गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

१. **ॐ गणपतये नमः** गणपतिम् आ.स्था.पू.।
२. **ॐ गौर्यै नमः** गौरीम् आ.स्था.पू.।
३. **ॐ पद्मायै नमः** पद्माम् आ.स्था.पू.।
४. **ॐ शच्यै नमः** शचीम् आ.स्था.पू.।
५. **ॐ मेधायै नमः** मेधाम् आ.स्था.पू.।
६. **ॐ सावित्र्यै नमः** सावित्रीम् आ.स्था.पू.।
७. **ॐ विजयायै नमः** विजयाम् आ.स्था.पू.।
८. **ॐ जयायै नमः** जयाम् आ.स्था.पू.।
९. **ॐ देवसेनायै नमः** देवसेनाम् आ.स्था.पू.।
१०. **ॐ स्वधायै नमः** स्वधाम् आ.स्था.पू.।
११. **ॐ स्वाहायै नमः** स्वाहाम् आ.स्था.पू.।
१२. **ॐ मातृभ्यो नमः** मातृः आ.स्था.पू.।
१३. **ॐ लोकमातृभ्यो नमः** लोलमातृः आ.स्था.पू.।
१४. **ॐ धृत्यै नमः** धृतिम् आ.स्था.पू.।
१५. **ॐ पुष्टयै नमः** पुष्टिम् आ.स्था.पू.।
१६. **ॐ तुष्टयै नमः** तुष्टिम् आ.स्था.पू.।
१७. **ॐ आत्मनः कुल देवतायै नमः**
आत्मननः कुल देवताम् आ.स्था.पू.।

- नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

- **प्रार्थना**
  आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
  निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

- **समर्पण**
  अनया पूजया गणेश सहित गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ नवग्रह मंण्डल पूजनम् ॥
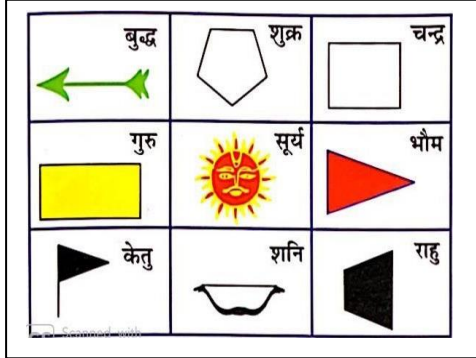
**ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशि भूमि-सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ॥**

- ग्रहोंके स्थापन-पूजनके लिये किसी वेदी अथवा पाटे पर नौ कोष्ठकों का एक चौकोर मण्डल बनाये। बीच वाले कौष्ठक में सूर्य, अग्निकोण के कोष्ठक में चन्द्र, दक्षिण में मंगल, ईशान कोण में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैर्ऋत्य कोण में राहु और वायव्य कोण में केतु की स्थापना करें।

- नवग्रहों का आवाहन एवं स्थापन करें।

1.	सूर्याय नमः	सूर्यम्	आ.स्था.।	6.	शुक्राय नमः	शुक्रम्	आ.स्था.।
2.	सोमाय नमः	सोमम्	आ.स्था.।	7.	शनैश्चराय नमः	शनैश्चरम्	आ.स्था.।
3.	भौमाय नमः	भौमम्	आ.स्था.।	8.	राहवे नमः	राहुम्	आ.स्था.।
4.	बुधाय नमः	बुधम्	आ.स्था.।	9.	केतवे नमः	केतुम्	आ.स्था.।
5.	बृहस्पतये नमः	बृहस्पतिम्	आ.स्था.।				

- नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

- **प्रार्थना** **सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सदबुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ॥**

- **समर्पण** अनया पूजया सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ विष्णु पूजनम् ॥

- **विष्णु ध्यानम्** ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ঙ सुरे स्वाहा ॥
- **संकल्प** देशकालौ संकीर्त्य मम सर्व पातक निवृत्तये श्री विष्णु प्रीतये च तुलसी विवाहांगतया पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैर्महा विष्णु पूजनं करिष्ये ।
- **आह्वान** ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
  स भूमि ঙ सर्व तस्पृत्वाऽ त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम् ॥
- **आसन** ॐ पुरुषऽएवेदं ঙ सर्व य्यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
  उतामृ तत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति ॥
- **पाद्य** ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
  पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि ॥
- **अर्घ्य** ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽ स्येहा भवत्पुनः।
  ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥
- **आचमनीयम्** ॐ ततो विराड जायत विराजोऽ अधि पूरुषः ।
  स जातोऽ अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥
- **स्नान** ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्व हुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
  पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥
- **पंचामृत स्नानम्** ॐ पंच नद्यः सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतसः ।
  सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित ॥
- **गन्धोदक स्नान** ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
  ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
- **शुद्धोदक स्नानम्** ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्यऽ अश्विनाः। श्वेतः श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥
- **वस्त्रम्** ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
  छन्दा ঙ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्माद जायत ॥
- **उपवस्त्रम्** ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ।
  वासोग्ने विश्वरूप ঙ संव्ययस्व विभावसो ॥
- **यज्ञोपवितम्** ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
  आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
- **गंध / चंदनम्** ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वां मिन्द्रस्त्वां बृहस्पति : ।
  त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद् मुच्यत् ॥

- **अक्षतम्** ॐ अक्क्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधुषत ।
  अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न्नविष्ठया मती योजान् विन्द्रतेहरी ॥
- **सुगन्ध द्रव्यम्** ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शु: पृच्यतां परुषा परु: ।
  गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽ अच्च्युत: ॥
- **पुष्प / पुष्पमाला** ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
  मयाहृतानि पुष्पाणि गृह्यन्तां पूजनाय भो: ॥
- **सौभाग्य द्रव्य** ॐ अहिरीव भोगै: पर्येति बाहुन्ज्यावा हेतिम्परिवाधमान: ।
  हस्तघ्नो विश्वावयुनानिविद्वान पुमान पुमा गंगवहे समपरिपातुविश्वत: ॥
- **धुपम्** ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वाम: ।
  देवानामसि वह्नितमं ७ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥
- **दीप** ॐ साज्यं च वर्ति संयुक्तम् वह्निना योजितम् मया ।
  दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यति मिरापहम् ॥
- **नैवद्यम्** ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत ।
  पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥
- **ऋतुफलम्** ॐ या: फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:।
  बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ ह स: ॥
- **ताम्बूल** ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
  वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि: ॥
- **दक्षिणा** ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् ।
  स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥
- **नीराजंन** ॐ इद ७ हवि: प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ७ सर्वगण ७ स्वस्तये ।
  आत्मसनि प्रजासनि पशुसति लोकसन्य भयसनि: ।
  अग्नि प्रजा बहुलां में करोत्वनं न्यतो रेतोऽस्मासु धत ।
- **पुष्पांजलि** ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
  ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ॥
  - नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
    पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
- **प्रदक्षिणा** ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिण: ।
  तेषा ७ सहस्र योजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥
- **अर्पण** अनेन विष्णुपूजनाख्येन कर्मणा भगवान विष्णु प्रीयताम् न मम ।

॥ मधुपर्क पूजन विधानम् ॥

- **पाद्य प्रदानम्**
  - मंत्र ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोह मशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ।
  - **यजमान** ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यम् । विष्णवे नमः ।
    इति विष्णोः पादौ प्रक्षाल्य ।

- **अर्घ प्रदानम्**
  - मंत्र ॐ समुद्रं व प्रहिणोमि स्वां योनि मभि गच्छत ।
    अरिष्टा ऽस्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः ॥
  - **यजमान** ॐ अर्घो अर्घो अर्घः । विष्णवे नमः ।
    अर्घ्यमिति निवेदयेत् ।

- **आचमन प्रदानम्**
  - मंत्र ॐ आमागन्यशसा स ७ सृज वर्चसा ।
    तं मा कुरु प्रियं प्रजाना मधिपतिं पशूना मरिष्टिं तनूनाम् ॥
  - **यजमान** ॐ आचमनीयम् - आचमनीयम् - आचमनीयम् । विष्णवे नमः ।
    इत्याचमनं दत्वा ।

- **मधुपर्क प्रदानम्**
  - मंत्र ॐ विष्णो दधिघृतक्षीरं कांस्यपात्र पुटीकृतम् ।
    मधुपर्कं गृहाणत्वं वासुदेव नमोस्तुते ॥
  - **यजमान** ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्क इत्युक्त्वा । विष्णवे नमः ।
    इति मधुपर्कं दद्यात ।

॥ तुलसी पूजनम् ॥

- **तुलसी ध्यानम्** ॐ तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये॥
  - ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्।
प्रसन्नपद्मकल्हारवराभयचतुर्भुजाम्॥
  - किरीटहारकेयूरकुंडलादिविभूषिताम्।
धवलांशुकसंयुक्तां पद्मासननिषेदुषीम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: तुलसी इहगच्छ इह तिष्ठत, तुलसी देव्यै नमः, तुलसी आ० स्था० पू०।

- **संकल्प** देशकालौ स्मृत्वा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं ममाखण्डित सौभाग्य सन्तत्या आयु-आरोग्य-एश्वर्याभि वृद्धि द्वारा श्री तुलसी देवता प्रीत्यर्थं तुलसी पूजनं करिष्ये।
- **आह्वान** देवि त्रैलोक्यजननि सर्वलोकैकपावनि।
आगच्छ भगवत्यत्र प्रसीद तुलसि द्रुतम्॥
- **आसन** सर्व देवमये देवि सर्वदा विष्णुवल्लभे।
रत्नस्वर्णमयं दिव्यं गृहाणासनमव्यये॥
- **पाद्य** सर्व देव मयाकारे सर्व देव नमोऽस्तुते।
पाद्यं गृहाण देवेशि तुलसि त्वं प्रसीद मे॥
- **अर्घ्य** सर्व देव मयाकारे सर्वांग मणिशोभिते।
इदमर्घंगृहानत्वं देवि दैत्यांन्तकप्रिये॥
- **आचमन** सर्वलोकस्य रक्षार्थं सदा संनिधिकाररिणि॥
गृहाण तुलसि प्रीत्या इदमाचमनीयकं॥
- **स्नान** गंगादिभ्यो नदीभ्यश्च समानीतमिदं जलम्।
स्नानार्थं तुलसि स्वच्छं प्रीत्या तत्प्रतिगृत्द्यताम्॥
- **पंचामृत स्नान** ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यान्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित॥
- **गन्धोदक स्नान** ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्
- **शुद्धोदक स्नानम्** ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्यऽ अश्विना:। श्वेत: श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ॥
- **वस्त्रम्** क्षिरोद्मथनोद्भूते चंद्र लक्ष्मी सहोदरे।
गृह्यतां परिधानार्थमिदं क्षौमांबरं शुभे॥

- **उपवस्त्रम्** कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितम् ।
  गृहाण त्वं मया दत्तं तुलसी भवहारिणि ॥
- **कुंकुमम्** श्रीगंधं कुंकुमं दिव्यं कर्पूरागरुसंयुतम् ।
  कल्पितं ते महादेवि प्रीत्यर्थं प्रतिगृत्द्यताम् ॥
- **अक्षतम्** अक्षतांश्च महादेवि तुलसि सौख्यदायिके ।
  अर्पयामि सदा भक्त्या सुखसन्ततिलब्धये ॥
- **सुगन्ध द्रव्यम्** ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
  गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽ अच्च्युतः ॥
- **पुष्पम्** नीलोत्पलं तु कल्हार मालत्यादीनि शोभने ।
  पद्मादिगंधवंतीनि पुष्पाणि प्रतिगृत्द्यताम् ॥
- **सौभाग्य द्रव्यम्** ॐ अहिरीव भोगैः पर्येति बाहुन्ज्यावा हेतिम्परिवाधमानः।
  हस्तघ्नो विश्वावयुनानिविद्वान पुमान पुमा गंगवहे समपरिपातुविश्वतः ॥
- **धुपम्** धूपं गृहाण् देवेशि मनोहारि सगुग्गलम् ।
  आज्यमिस्रं तु तुलसि भक्ताभिष्टप्रदायिनि ॥
- **दीपम्** अज्ञानति मिरांधस्य ज्ञान दीप प्रदायिनी ।
  त्वया तु तुलसि प्रिता दीपोयं प्रतिगृत्द्यताम् ॥
- **नैवद्यम्** नमस्ते जगतां नाथे प्राणिनां प्रियदर्शने ।
  यथाशक्ति मया दत्तं नैवेद्यम् प्रतिगृत्द्यताम् ॥
- **ऋतुफलम्** ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
  बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ ह सः ॥
- **ताम्बूलम्** अमृते मृत संभूते तुलस्य मृत रूपिणि ।
  कर्पूरादि समायुक्तं तांबूलं प्रतिगृत्द्यताम् ॥
- **दक्षिणाम्** दक्षिणा दक्षिणकरे त्वद्भक्तानां प्रियंकरि ।
  करोमि ते सदा भक्त्या विष्णुकांते प्रदक्षिणाम् ॥
- **नीराजंन** ॐ इद ७ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ७ सर्वगण ७ स्वस्तये ।
  आत्मसनि प्रजासनि पशुसति लोकसन्य भयसनिः ।
  अग्नि प्रजा बहुलां में करोत्वनं न्यतो रेतोऽस्मासु धत ।
- **पुष्पांजलि** ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
  ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
  - नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
    पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

- **प्रदक्षिणा** ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिण: ।
  तेषा ७ सहस्र योजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥
- **नमस्कानम्** त्वां दृष्ट्वा निखिलौघसंघशमनी स्पृष्ट्वा वपु:पावनी ।
  रोमाणामभिवन्दिता निग्सनी सिक्तऽन्तदात्रासिनी ॥
  प्रत्यासन्तिविधायिनी भगवत: कृष्णस्य संरोपिता ।
  न्यास्तातच्चरणे विमुक्तफलदा तस्यै तुलस्यै नम: ॥
- **प्रार्थना** वृंदा वृंदावनी विश्वपूजिता विश्वपावनी ।
  पुष्पसारा नंदनीय तुलसी कृष्ण जीवनी ॥
  - एतभामांष्टक चैव स्त्रोतं नामर्थं संयुतम ।
    य: पठेत तां च सम्पूज्य सौश्रमेघ फलंलमेता ॥
- **अर्पण** अनेन मया यथाशक्त्या कृतेन पूजनेन श्री तुलीसी देवता प्रीयताम् न मम ।
  तुलस्यार्पणमस्तु ।

- तुलसी जी की पूजा कर श्री विष्णु भगवान की प्रतिमा उनके सम्मुख रख वस्त्र छेक कर मंगलाष्टक पाठ करें ।

॥ मंगलाष्टकम् ॥

- ॐश्रीमत्कार्तिक शुक्लगा तिथिवरा चैकादशी द्वादशी ।
  तस्यांगोरज लग्नके वधुवरौ साक्षाज्जगन्नायकौ ॥
  कृष्णस्तुलसी विवाहमकरोत्तस्मिन्विवाहोत्सवै ।
  तौ देवो भवतामं सदा शुभकरा लक्ष्मी करौ मंगलम् ॥

- ॐ श्री मत् पंकज विष्टरो हरिहरौ, वायुमर्हेन्द्रोऽनलः,
  चन्द्रो भास्कर वित्तपाल वरुण, प्रताधिपादिग्रहाः ।
  प्रद्यम्नो नलकूबरौ सुरगजः, चिन्तामणिः कौस्तुभः,
  स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ १ ॥

- गंगा गोमतिगोपतिगर्णपतिः, गोविन्दगोवधर्नौ,
  गीता गोमयगोरजौ गिरिसुता, गंगाधरो गौतमः ।
  गायत्री गरुडो गदाधरगया, गम्भीरगोदावरी,
  गन्धवर्ग्रहगोपगोकुलधराः, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ २ ॥

- नेत्राणां त्रितयं महत् पशुपतेः अग्नेस्तु पादत्रयं,
  तत्तद्विष्णु-पदत्रयं त्रिभुवने, ख्यातं च रामत्रयम् ।
  गंगावाहपथत्रयं सुविमलं, वेदत्रयं ब्राह्मणम्,
  संध्यानां त्रितयं द्विजैरभिमतं, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ ३ ॥

- बाल्मीकिः सनकः सनन्दनमुनिः, व्यासोवसिष्ठो भृगुः,
  जाबालिजर्मदग्निरत्रिजनकौ, गर्गोऽ गिरा गौतमः ।
  मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो, धन्यो दिलीपो नलः,
  पुण्यो धमर्सुतो ययातिनहुषौ, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ ४ ॥

- गौरी श्रीकुलदेवता च सुभगा, कद्रूसुपणार्शिवाः,
  सावित्री च सरस्वती च सुरभिः, सत्यव्रतारुन्धती ।
  स्वाहा जाम्बवती च रुक्मभगिनी, दुःस्वप्नविध्वंसिनी,
  वेला चाम्बुनिधेः समीनमकरा, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ ५ ॥

- गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना, गोदावरी नमर्दा,
  कावेरी सरयू महेन्द्र-तनया, चमर्ण्वती वेदिका ।
  शिप्रा वेत्रवती महासुर-नदी, ख्याता च या गण्डकी,
  पूर्णाः पुण्यजलैः समुद्र-सहिताः, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ ६ ॥

- लक्ष्मीः कौस्तुभ-पारिजात-कसुरा, धन्वन्तरिश्चन्द्रमा,
  गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो, रम्भादि-देवांगनाः ।
  अश्वः सप्तमुखः सुधा हरिधनुः, शंखो विषं चाम्बुधे,
  रतनानीति चतुदर्श प्रतिदिनं, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ ७ ॥

- ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः, सूयोर् ग्रहाणां पतिः,
  शुक्रो देवपतिनर्लो नरपतिः, स्कन्दश्च सेनापतिः ।
  विष्णुयर्ज्ञपतियर्मः पितृपतिः, तारापतिश्चन्द्रमा,
  इत्येते पतयस्सुपणर्सहिताः, कुवर्न्तु वो मंगलम् ॥ ॥ ८ ॥

- इसके बाद अन्त:पट का विसर्जन करें एवं भगवान विष्णु के हाथ में तुलसी जी का दान करें।

॥ तुलसी कन्या दान / वाग्दानम् ॥

- **संकल्प** देशकालौ संकीर्त्य श्री अमुक-गोत्र अमुक-शर्माहं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृत कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक दोष परिहारार्थं तथा च विष्णु प्रसन्नतार्थं अमुक-गोत्रस्य, अमुक-शर्माण: प्रपौत्रीं, अमुक-गोत्रस्य, अमुक-प्रवरस्य, अमुक-सर्मण: पुत्रीं, इत्यनेनैव क्रमेण त्रिरावर्त्य कश्यप गोत्राय दामोदराय महा विष्णवे वराय कन्या वत्सं वर्द्धितामिमां तुलसीं श्री रुपिणीं यथाशक्त्यलंकृतां तुभ्यं श्रीधरायाहं संप्रददे ।

- **वरगोत्रमुच्चार्य** वैयाघ्रपद गार्ग्य, वासिष्ठेति त्रिप्रवरान्विते व्याघ्रपद गोत्रोत्पन्नाय देवमीढ वर्मणः प्रपौत्राय, शुरसेन वर्मणः पौत्राय, वसुदेव वर्मणः पुत्राय, अनेककोटि, ब्रह्माण्डनायक दामोदराय श्रीधराय वराय, आलम्बायन देवल गौतमेति त्रिप्रवरान्वित विश्वकर्मण: प्रपौत्रीम् प्रजापतेः पौत्रीम् ईश्वरस्य पुत्रीम् तुलसीं कन्याम् भार्यात्वाय वृणीमहे ॥

- **कन्यागोत्रमुच्चार्य** वैयाघ्रपद गार्ग्य, वासिष्ठेति त्रिप्रवरान्विते व्याघ्रपद गोत्रोत्पन्नाय देवमीढ वर्मणः प्रपौत्राय, शुरसेन वर्मणः पौत्राय, वसुदेव वर्मणः पुत्राय, अनेककोटि, ब्रह्माण्डनायक, सकल प्रवर गोत्र जनकाय पार्वतीबीजसम्भूताय वृन्दा भस्मनि संस्थिताय अनादि मध्य निधनाय परमात्मने श्रीकृष्ण दामोदराय वराय । आलम्बायन देवल गौतमेति त्रिप्रवरान्वित विश्वकर्मण: प्रपौत्रीम् प्रजापतेः पौत्रीम् ईश्वरस्य पुत्रीम् अमुक गोत्रोत्पन्नां (यजमानस्य) पयोघटैः सेचित कन्यावत् वर्द्धित भावनीय तुलसी नाम्नीं कन्याम् श्रीकृष्णार्थिनीम् श्री रुपिणीं वरार्थिनीम् वनस्पति दैवत्यं विष्णु सायुज्य प्राप्त्यर्थं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

- तुलसी पल्लवं दक्षिण हस्तांगुष्ठेन परिकल्प्य दामोदर हस्ते दद्यात्।
- पुन: भगवान विष्णु के हाथ का स्पर्श करा के निम्न श्लोक पढे।

- **श्लोक** **अनादि मध्य निधनस्त्रैलोक्य परिरक्षक।**
  इमां गृहाण तुलसीं विवाह विधिनेश्वर॥ ॥ १ ॥
  - **पार्वती बीज संभूतां वृन्दाभस्मानि संस्थिताम्।**
    अनादि मध्यनिधनां वल्लभां ते ददाम्यहम्॥ ॥ २ ॥
  - **पयोघटैश्च सेवाभी: कन्या वद्ववर्धिता मया।**
    त्वत्प्रियां तुलसीं तुभ्यं दास्यामि त्वं गृहाण भो:॥ ॥ ३ ॥

- **तुलसी प्रार्थना** **त्वं देवि मेऽग्रतो भूयास्तुलसिदेवि पार्श्वयो:।**
  देवि त्वं पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम्॥
  - इति संप्रार्थ्य पुनस्तां संपूज्य कोदात्कस्मेति मन्त्रं पठेत।

- **दक्षिणा संकल्प** **तत् कृतैतत्तुलसी दान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थंमिमां सुवर्ण दक्षिणां तुभ्यं दामोदराय संप्रददे। इति देवपुरतो दक्षिणामर्पयेत्।**

- पुन: निम्नलिखित स्वस्त्ययन एवं शान्तिक मन्त्रो का पाठ करें।

- **शान्तिक मन्त्रा** **ॐ स्वस्तिनो मिमीतामश्विना भग स्वस्तिते वदन्ति। निर्विण्णा: स्वस्तिन: पूषा अशु दधातु स्वस्तिन: द्यावा पृथ्वी सुचिनुत: स्वस्ति वायुर्मे व्रताय मही च स्वस्ति भुवनस्पति:। बृहस्पतिं सर्वगुणं स्वस्ति आदित्यासो भवन्तु न:। वैश्वानरो वसुगण्यं स्वस्ति देवी अभयं स्वस्तिनो मित्रा वरुणा स्वस्ति पन्था रेवति - स्वस्तिनो आदित्याकृधि स्वस्ति - ऋभुक्षामा नुचरम सूर्याय चंद्रमसाय पुनर्दत्ताय अग्निताय जानताय संगमे महिद्धुतं तं वयास देवानां विसुर्गन्यामिन्द्र अभयं सततं वृद्धि। अयं भूमिश्च मनसा रक्षतु प्राणाय स्वस्ति संवादे शुभं नोवृद्धि॥ ॐ शन्नो व्वात: पवता ७ शन्नस्तपतु सूर्य: । शन्न: कनिक्रद्देव: पर्जन्योऽअभिवर्षतु॥** ॥ १ ॥
  - **ॐ शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभि: शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या।**
    शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिंद्रासोमा सुविताय शंयो:॥ ॥ २ ॥
  - **ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।शंयोरभिस्रवन्तु न:॥** ॥ ३ ॥

॥ हवन विधि ॥

शुद्ध आसन देकर ब्राह्मणों को अग्नि के दक्षिण में अग्नि प्रदक्षिणा क्रम से 'अस्मिन कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' कहकर आसन पर बैठाये तथा प्रणीता-पात्र को जल से परिपूर्ण कर २ कुश से ढक कर हवनादि स्थल का कुश मार्जन करें हवन मन्त्रों से अग्नि स्थापन करे तथा पायस, आज्य मधु और तिलों से हवन करे।

- **अग्नि स्थापनम्** सौभाग्यवती स्त्री / बहन से कांसे, तांबे या मिट्टी के पात्र में अग्नि मंगाए।
  - **अग्नि मन्त्र** **ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे।**
    देवाँ २ आ सादयादिह ॥
  - **ॐ योजकनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।**
  - थाली में द्रव्य - अक्षत छोड कर अग्नि जिससे लिये हैं उन्हें देदें।

- **अग्नि ध्यान** **ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।**
  त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २ आविवेश ॥
  - ॐ भूर्भुवः स्वः योजकनाम्ने अग्नये नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

- यजमान निम्न मंत्रो से शाक्लय का हवन करें। ब्राह्मण या अन्य कोई घी से हवन करें।

- आघार होम
  ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। ॥१॥
  ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम। ॥२॥

- आज्यभाग होम
  ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम। ॥१॥
  ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम। ॥२॥

- महाव्याहृति होम
  ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये न मम। ॥१॥
  ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम। ॥२॥
  ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम। ॥३॥

- प्रायश्चित होम
  ॐ त्वन् नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य होडो अव यासि सीष्ठाः।
  यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ७ सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥
  इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम। ॥१॥

  २. **ॐ स त्वन् नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।**
  अव यक्ष्व नो वरुण ७ रराणो वीहि मृडीक ७ सुहवो न एधि स्वाहा॥
  इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम।

३. **ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्त्व मया असि।**
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ७ स्वाहा॥
इदं अग्नये अयसे न मम।

४. **ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्तः।**
तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा॥
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्यश्च न मम।

५. **ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवा धमं वि मध्यम ७ श्रथाय।**
अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा॥
इदं वरुण आदित्यादितये न मम।

- फिर द्वादश आहुति देकर अग्नि प्रोक्षण करें।
- द्वादशाक्षर मन्त्र से या अष्टाक्षर मन्त्र से १०८ बार आहुती दें।

- द्वादशाक्षर मंत्र **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥**
- अष्टाक्षर मंत्र **ॐ नमो नारायणाय स्वाहा। इदं विष्णवे न मम॥**

- **पुरुषसुक्त आहुति**

ॐ सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्त्र पात् ।
स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम् ॥ ॥ १॥

- पुरुषऽ एव इद ७ सर्वम् यद्भूतम् यच्च भाव्यम् ।
उता मृत त्वस्ये शानो यदन्ने ना तिरोहति ॥ ॥ २॥
- एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ॥ ॥ ३॥
- त्रिपाद् उर्ध्व उदैत् पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥ ॥ ४॥
- ततो विराड् जायत विराजोऽ अधि पुरुषः ।
सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ॥ ॥ ५॥
- तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ॥ ६॥
- तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्मात् यजुस तस्माद् जायत ॥ ॥ ७॥
- तस्मा दश्वा ऽ अजायन्त ये के चो भयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः ॥ ॥ ८॥
- तं यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषम् जात मग्रतः ।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ ॥ ९॥
- यत् पुरुषम् व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखम् किमस्यासीत् किम् बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥ ॥१०॥
- ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ७ शूद्रो अजायत ॥ ॥११॥
- चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ॥१२॥
- नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः सम-वर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्ऽ अकल्पयन् ॥ ॥१३॥
- यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
वसन्तो ऽ स्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ ॥१४॥
- सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञन् तन्वानाः अबध्नन् पुरुषम् पशुम् ॥ ॥१५॥
- यज्ञेन यज्ञ मऽयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

- **स्विष्टकृत् होम** — हवन से अवशिष्ट हवि द्रव्य को लेकर स्विष्टकृत् होम करें।
  ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

- पुन: आचमन करके निम्न मन्त्रो से पूर्णपात्र ब्राह्मण को अर्पित करें।

- **पूर्णपात्र दान** — आचार्य को पूर्णपात्र एवं दक्षिणा दे।
  - **संकल्प** — **ॐ अद्य कृतस्य तुलसी विवाह होम कर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतम अमुक गोत्राया अमुक शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।**

- **पूर्णाहुति** — **ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजात मग्निम्।**
  कवि ७ सम्राज मतिथिं जनानामासन्ना पात्रां जनयन्त देवा: ।।
  - **ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।**
    पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते ।।

- **प्रार्थना** — **ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।**
  न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।
  अनेन कर्मणा दामोदर: प्रीचताम्।
  - **स्वशक्तै: उक्तविधिना तुलस्या: करपीडनम्।**
    कन्यादान फलं तस्य जायते नात्रसंशय: ।। कुर्यादितिशेष
  - **सौभाग्यार्थं धनार्थं च वीद्यार्थं तु निवृत्तये।**
    सन्तत्यर्थं प्रकर्तव्यं तुलस्यां पाणिपीडनम् ।।

।। इति तुलसी विवाह विधि ।।

॥ तुलसी माता जी की आरती ॥

- **तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।**
- **धन तुलसी पूरण तप कीनो, शालिग्राम बनी पटरानी ।**
  जाके पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति कमल चरण लपटानी ॥ ॥१॥
  तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।
- **धूप-दीप-नवैद्य आरती, पुष्पन की वर्षा बरसानी ।**
  छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसी हरि एक ना मानी ॥ ॥२॥
  तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।
- **सभी सखी मैया तेरो यश गावें, भक्तिदान दीजै महारानी ।**
  नमो-नमो तुलसी महारानी, तुलसी महारानी नमो-नमो ॥ ॥३॥
  तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।

तुलसी माता की आरती .. २

- **जय जय तुलसी माता, सब जग की सुख दाता सब की वर माता ।**
- **सब योगों के ऊपर, सब रोगों के ऊपर ।**
  रुज से रक्षा करके, सब की भव त्राता ॥ ॥१॥ जय जय तुलसी माता ..... ।
- **बटु पुत्री हे श्यामा, सुर बल्ली हे ग्राम्या ।**
  विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे, सो नर तर जाता ॥ ॥२॥ जय जय तुलसी माता ..... ।
- **हरि के शीश विराजत, त्रिभुवन से हो वन्दित ।**
  पतित जनो की तारिणी, तुम हो विख्याता ॥ ॥३॥ जय जय तुलसी माता ..... ।
- **लेकर जन्म विजन में, आई दिव्य भवन में ।**
  मानव लोक तुम्ही से, सुख संपति पाता ॥ ॥४॥ जय जय तुलसी माता ..... ।
- **हरि को तुम अति प्यारी, श्याम वर्ण तुम्हारी ।**
  प्रेम अजब हैं उनका, तुमसे कैसा नाता ॥ ॥५॥ जय जय तुलसी माता ..... ।

॥ इति आरती तुलसी माता सम्पूर्णम ॥

॥ तुलसी स्तोत्रम् ॥

पद्मपुराण के अनुसार द्वादशी की रात को जागरण करते हुए तुलसी स्तोत्र को पढ़ना या सुनना चाहिए। इस दिन भगवान विष्णु जातक के सभी अपराध क्षमा कर देते हैं।

- **जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं विष्णोश्च प्रियवल्लभे।**
  यतो ब्रह्मादयो देवाः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः॥ ॥ १ ॥
- **नमस्तुलसि कल्याणि नमो विष्णुप्रिये शुभे।**
  नमो मोक्षप्रदे देवि नमः सम्पत्प्रदायिके॥ ॥ २ ॥
- **तुलसी पातु मां नित्यं सर्वापद्भ्योऽपि सर्वदा।**
  कीर्तितापि स्मृता वापि पवित्रयति मानवम्॥ ॥ ३ ॥
- **नमामि शिरसा देवीं तुलसीं विलसत्तनुम्।**
  यां दृष्ट्वा पापिनो मर्त्या मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषात्॥ ॥ ४ ॥
- **तुलस्या रक्षितं सर्वं जगदेतच्चराचरम्।**
  या विनिहन्ति पापानि दृष्ट्वा वा पापिभिर्नरैः॥ ॥ ५ ॥
- **नमस्तुलस्यतितरां यस्यै बद्ध्वाजलिं कलौ।**
  कलयन्ति सुखं सर्वं स्त्रियो वैश्यास्तथाऽपरे॥ ॥ ६ ॥
- **तुलस्या नापरं किञ्चिद् दैवतं जगतीतले।**
  यथा पवित्रितो लोको विष्णुसङ्गेन वैष्णवः॥ ॥ ७ ॥
- **तुलस्याः पल्लवं विष्णोः शिरस्यारोपितं कलौ।**
  आरोपयति सर्वाणि श्रेयांसि वरमस्तके॥ ॥ ८ ॥
- **तुलस्यां सकला देवा वसन्ति सततं यतः।**
  अतस्तामर्चयेल्लोके सर्वान् देवान् समर्चयन्॥ ॥ ९ ॥
- **नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरुषोत्तमवल्लभे।**
  पाहि मां सर्वपापेभ्यः सर्वसम्पत्प्रदायिके॥ ॥ १०॥
- **इति स्तोत्रं पुरा गीतं पुण्डरीकेण धीमता।**
  विष्णुमर्चयता नित्यं शोभनैस्तुलसीदलैः॥ ॥ ११॥
- **तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्याविद्या यशस्विनी।**
  धर्म्या धर्नानना देवी देवीदेवमनःप्रिया॥ ॥ १२॥
- **लक्ष्मीप्रियसखी देवी द्यौर्भूमिरचला चला।**
  षोडशैतानि नामानि तुलस्याः कीर्तयन्नरः॥ ॥ १३॥
- **लभते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत्।**
  तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीर्हरिप्रिया॥ ॥ १४॥
- **तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे।**
  नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये॥ ॥ १५॥

॥ इति श्रीपुण्डरीककृतं तुलसीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ पूजन-सामग्री ॥

१. श्री महाविष्णु प्रतिमा (स्वर्ण की)
२. तुलसी प्रतिमा (चाँदी की)
३. तुलसी वृक्ष
४. गंगाजल
५. गंगा मृत्तिका
६. रोली
७. मौली
८. पञ्चरत्न
९. लाल वस्त्र
१०. अक्षत
११. दीप
१२. नैवेद्य
१३. चन्दन
१४. कुश
१५. धूप
१६. पुष्प
१७. कर्पूर
१८. पञ्च पल्लव
१९. सप्त धान्य
२०. फल
२१. हल्दी
२२. कुंकुम
२३. पान
२४. सुपारी
२५. मधुपर्क
२६. हवन-सामग्री
२७.
२८. नोट : अन्य सामग्री आचार्य के कथनानुसार।